जय प्रेतराज कृपालु मेंरी, अरज अब सुन लीजिये।
मैं शरण तुम्हारी आ गया हूँ, नाथ दर्शन दीजिये।।
मैं करूं विनती आपसे अब, तुम दयामत चित करों।
चरणों का ले लिया आसरा, प्रभु वेग से मेरा दुःख हरो।।
सिर पर मुकुट कर में धनुष, गल बीच मोतियन की माल है।
जो करे दर्शन प्रेम से सब, कटत तन के जाल है।।
जब पहन बख्तर ले खड़ग, बाई बगल में
ऐसा भंयकर रूप जिनका, देख डरपत काल है।
अति प्रबल सेना विकट योद्धा, संग में विकराल हैं।
सब भूत प्रेत पिशाच बांधे, कैद करते हाल है।।
तब रूप धरते वीर का, करते तैयारी चलन की।
संग में लड़ाके ज्वान जिनकी, थाह नहीं है बलन की।।
तुम सब तरह सामर्थ हो, प्रभु सकल सुख के धाम।
दुष्टो के मारन हार हो, भक्तो के पूरण काम हो।।
मैं हूँ मती का मन्द, मेरी बुद्धि को निर्मल करों।
अज्ञान का अन्धेर उर में, ज्ञान का दीपक धरो।।
सब मनोरथ सिद्ध करते, जो कोई सेवा करें।
तन्दूल बूरा घृत मेवा, भेंट ले आगे धरे।।
सुयश सुन कर आपका, दुखिया तो आये दूर के।
सब स्त्री अरू पुरूष आकर, पड़े है चरण हजूर के।।
लीला है अद्भुत आपकी, महिमा तो अपरंपार है।
मैं ध्यान जिस दम धरत हूँ, रच देना मंगलाचार है।।
सेवक गणेशपुरी महन्त जी की, लाज तुम्हारे हाथ है।
करना खता सब माफ उनकी, देना हरदम साथ है।।
दरबार में आओ अभी, सरकार में हाजीर खडा ।
इन्साफ मेरा अब करो, चरणों मे आकर गिर पड़ा।।
अर्जी बहुत मैं दे चुका, अब गौर इस पर कीजिये।
तत्काल इस पर हुक्म लिख दो, फैसला कर दीजिए।।
महाराज की यह स्तुति, कोई नेम से गाया करें।
सब सिद्ध कारज होय उनके, रोग पीडा सब टरे।।
"सुखराज" सेवक आपका, उसको नहीं बिसराइये।
जै जै मनाऊँ आपकी, बेडे को पार लगाइये।।